⭐ अद्भुत रस ⭐

परिभाषा→

अद्भुत रस का स्थायी भाव विस्मय होता है। जब किसी जीव के मन में विचित्र अथवा आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखकर जो विस्मय आदि का भाव उत्पन्न होता है, उसे अद्भुत रस कहा जाता है।

अथवा

जब विस्मय नामक स्थायी भाव विभाव अनुभाव संचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है, तब अद्भुद रस की निष्पत्ति होती है।

उदाहरण→

- अखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु ।
  चकित भई गद्गद बचन, विकसित दृग पुलकातु ॥

- इहाँ उहाँ दुई बालक देखा । मति भ्रम मोर कि अवनि विशेषा।
- देख यशोदा शिशु के मुख में,
  सकल विश्व की माया।
  क्षण भर को वह बनी अचेतन,
  हिल न सकी कोमल काया||

- बिनु पग चलै सुने बिनु काना।
  कर बिनु कर्म करै विधि नाना ॥

⭐ वीभत्स रस ⭐

परिभाषा→

'घृणित वस्तुओं को देखकर या सुनकर उत्पन्न होने वाली घृणा। ग्लानि वीभत्स रस की पुष्टि करती है। स्थायी भाव - जुगुप्सा।

उदाहरण→

- रिपु आंतन की कुंडली, कर जोगिनी चबात।
  पीबहि में पागी भली, जुबति जलेबी खात॥

- सिर पर बैठो काग, आँखि दोउ खात निकारत ।

  खींचत जीभहिं स्यार, अतिहि आनँद उर धारत ॥

  गिद्ध जाँघ कह खोदि खोदि के मांस उचारत ।

  स्वान आँगुरिन काटि काटि के खान बिचारत ॥

  बहु चील्ह नोंचि ले जात तुच, मोद मढ्यो सबको हियो ।

  जनु ब्रह्म-भोज जिजमान कोउ, आज भिखारिन कहुँ दियो ॥

स्पष्टीकरण → यह श्मशान का दृश्य है। पशु-पक्षियों की क्रीड़ाओं को देखकर चाण्डाल - सेवारत राजा हरिश्चन्द्र के मन में जो 'घृणा' पैदा हो रही है, वही स्थायी भाव है। 'शवों की हड्डी, त्वचा आदि' आलम्बन विभाव हैं। 'कौओं का आँख निकालना, सियार का जीभ को खींचना, गिद्ध का जाँघ खोद-खोदकर मांस नोचना तथा कुत्तों का उँगलियों को काटना' उद्दीपन है। 'राजा हरिश्चन्द्र द्वारा इनका वर्णन' अनुभाव है। 'मोह, स्मृति आदि' संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ बीभत्स रस की निष्पत्ति हुई है।

- 'विष्टा पूय रुधिर कच हाडा॥ बरषइ कबहुं उपल बहु छाडा'॥

- आँखे निकाल उड़ जाते, क्षण भर उड़ कर आ जाते
  शव जीभ खींचकर कौवे, चुभला-चभला कर खाते
  भोजन में श्वान लगे मुरदे थे भू पर लेटे
  खा माँस चाट लेते थे, चटनी सैम बहते बहते बेटे

- लाथिन सों लोहू के प्रवाह चले जहां तहां, मानहुँ गरिन गेरू झरना झरत हैं।

सोनित सरित घोर, कुंजर करारे भारे, कूल ते समूल बाजि - बिटप परत है ॥

सुभट सरीर नीर बारी भारी भारी तहां, सूरनि उछाह, कूर कादर डरत हैं।

फेकरि फेकरि फेरू-फारि फारि पेट खात, काक कंक-बालक कोलाहल करत हैं ।'

- ओझरी की झोरी काँधे, आसवि की सेल्ही वांधे, सूँड़
के कमंडलु, खपर किये कोरि कै।
जोगिनी झटंग झुंड - झुंड बनी तापसी सी तीर-तीर बैठीं
सो समर सरि खोरि कै ॥
सोनित सो सानि सानि गूदा खात सतुआ से, प्रेत एक
पियत बहारि घोरि घोरि कै।
तुलसी बैताल भूत साथ लिये भूतनाथ हेरि हेरि हँसत हैं
हाथ जोरि जोरि कै ॥

- कोड अंतहिनि की पहिरि माल इतरात दिखावत।
  कोड चरबी लै चोप सहित निज अंगनि लावत ॥
  कोड मुंडनि लै मानि मोद कंदुक लौं डारत ।
  कोड रुंडनि पै बैठि करेजी फारि निकारत ॥

रौद्र रस

परिभाषा → जब क्रोध नामक स्थायी भाव विभाव अनुभाव, व्यभिचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है, तब रौद्र रस की निष्पत्ति होती है।

जैसे→

ज्वलल्ललाट पर अदम्य, तेज वर्तमान था

प्रचण्ड मान भंग जन्य, क्रोध वर्तमान था

ज्वलन्त पुच्छ-बाहु व्योम में उछालते हुए

अराति असह्य अग्नि दृष्टि डालते हुए

उठे कि दिग-दिगन्त में अवर्ण्य ज्योति छा गई।

कपीश के शरीर में प्रभा स्वयं समा गई।

- "माखे लखन कुटिल भयीं भौंहें।
  रद-पट फरकत नयन रिसौहैं॥
- कहि न सकत रघुबीर डर, लगे वचन जनु बान।
  नाइ राम-पद-कमल-जुग, बोले गिरा प्रमान॥”
- रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सांभर ।
  धनुहि सम त्रिपुरारि धुत बिदित सकल संसार ।
- 'उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा।
  मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा ।"

स्थायी भाव→क्रोध

आश्रय→अर्जुन

विषय→ अभिमन्यु को मारने वाला जयद्रथ

उद्दीपन→ अकेले बालक अभिमन्यु को चक्रव्यूह में फँसाना तथा सात महारथियों द्वारा उस पर आक्रमण करना

अनुभाव→ शरीर काँपना, क्रोध करना, मुख लाल होना आदि।

संचारी भाव- उग्रता, चपलता

भयानक रस

परिभाषा →

जब भय नामक स्थायी भाव विभाव अनुभाव व्यभिचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है, तब भयानक रस की निष्पति होती है।

उदाहरण→

- "एक ओर अजगरहिं लखि एक ओर मृगराय ।

  विकल बटोही बीच ही पर्यो मूरछा खाय ।। "

स्थायी भाव→भय

आश्रय→ राहगीर

विषय→ अजगर, मृगराज (सिंह) का राहगीर की ओर बढ़ना

उद्दीपन- भयानक जंगल

अनुभाव→डरना, मूर्च्छित होना

संचारी भाव→ मरण, बेहोश होना आदि।

- उधर गरजती सिंधु लहरियाँ

  कुटिल काल के जालों सी।

  चली आ रहीं फेन उगलती

  फन फैलाये व्यालों सी।

- लंका की सेना तो कपि के गर्जन रव से काँप गई।

  हनूमान के भीषण दर्शन से विनाश ही भाँप गई।

  उस कंपित शंकित सेना पर कपि नाहर की मार पड़ी।

  त्राहि-त्राहि शिव त्राहि-त्राहि शिव की सब ओर पुकार पड़ी ॥

⭐ वात्सल्य रस ⭐

वात्सल्य नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से 'वात्सल्य' रस के रूप में सम्पुष्ट होता है। पुत्र, शिष्य आदि के प्रति जनित स्नेह को प्रकट करने की दशा में 'वात्सल्य' रस की उत्पत्ति होती है। 'श्रृंगार रस' की भाँति वात्सल्य' रस के भी दो भेद किये गये हैं-

(1) संयोग वात्सल्य→

जब माता-पिता की उपस्थिति में बालक के प्रति प्रदर्शित किया जाता है।

(2) वियोग वात्सल्य- बालक के बिछड़ जाने पर माता-पिता के स्नेह में वियोग वात्सल्य होता है।

स्थायी भाव→ वत्सलता / पुत्र विषयक रति ।

उदाहरण → (1) (संयोग वात्सल्य) -

चलत पद प्रतिबिम्ब मनि आँगन घुटुरुवनि करनि ।
जलज- सम्पुट - सुभग छबि भरि लेति जनु धरनि ॥
पुन्य फल अनुभवति सुतहिं विलोकि के नन्द-घरनि ।
सूर प्रभु की उर बसी, किलकनि ललित लरखरनि ॥

(2) (वियोग वात्सल्य) →

कहा काज मेरे छगन मगन कौं नृप मधुपुरी बुलाया।

सुफलक-सुत मेरे प्रान हरन कौं, काल रूप है आयौ ॥

वरू यह गोधन हरौ कंस सब, मोहिं बन्दी लै मेलौ ।

इतनोई सुख कमलनयन, मेरी अँखियनि आगैं खेलौ ॥

⭐ भक्ति रस ⭐

जहाँ पर परमात्मा-विषयक प्रेम विभाव आदि से परिपुष्ट हो जाता है, वहाँ पर 'भक्ति' रस की उत्पत्ति होती है।

स्थायी भाव→भगवद्विषयक रति ।

उदाहरण→ अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोई।

'मीरा' की लगन लागी, होनी हो सो होई ॥

स्पष्टीकरण→ उक्त पंक्तियों में 'श्रीकृष्ण के प्रति मीरा का अनुराग' स्थायी भाव है। 'श्रीकृष्ण' आलम्बन हैं। 'सत्संग' उद्दीपन है। 'आँसू, प्रेम-बेलि का बोना और आँसुओं से सींचना' अनुभाव है। शंका, हर्ष आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ भक्ति रस का सुन्दर परिपाक हुआ है